प्रौद्योगिकी के बावजूद मोटे अनाज के अंतर्गत क्षेत्र में 75 प्रतिशत की कमी

मोटे अनाज पर किसानों को एम.एस.पी. देने की आवश्यकता, यूक्रेन संघर्ष के कारण देश को अधिक गेहूं उत्पादन की जरूरत

पालमपुर, 10 मार्च (भृगु): विगत 70 वर्षों में मोटे अनाज के अंतर्गत क्षेत्र में 75 प्रतिशत की कमी आई है। यद्यपि देश के पास मोटे अनाज उत्पादन को 225 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध है। यह खुलासा कृषि विश्वविद्यालय में मोटे अनाज पर उत्तर-पश्चिमी हिमालय की मूल कृषि जैव विविधता को मुख्य धारा में लाने पर विचार-मंथन सत्र में विशेषज्ञों ने किया।

उद्घाटन सत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक टी.आर. शर्मा ने वैज्ञानिकों, किसानों और अन्य हितधारकों को संबोधित करते हुए कहा कि छात्रों को पौष्टिक आहार देने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए मिड-डे मील में मोटे अनाज को शामिल किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आई.सी.ए.आर. की कृषि जैव विविधता पर एक बड़ी परियोजना है, जिसके अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं।

जलवायु अनुकूल फसल किस्मों को विकसित करने के लिए भू-प्रजातियों और जंगली प्रजातियों का संग्रह और संरक्षण महत्वपूर्ण है। कम उपयोग वाली फसलों के अतिरिक्त आई.सी.ए.आर. उच्च मात्रा में जस्ता युक्त गेहूं जैसी किस्मों के बायो फोर्टिफिकेशन पर काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि यूक्रेन संघर्ष के कारण भारत को अधिक गेहूं उगाने की जरूरत है, परंतु मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ाने पर भी उतना ही जोर देना चाहिए। इस मौके पर अलायंस बायोडायवर्सिटी इंटरनैशनल और इंटरनैशनल सैंटर फॉर ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर के निदेशक डा. जे.सी. राणा ने बताया कि कृषि जैव विविधता को मुख्यधारा में लाने के लिए लगभग 100 करोड़ रुपए की परियोजना आरंभ की गई है। यह अच्छे परिणाम देगी। अच्छी कीमत मिलने पर किसान ऐसी फसलें उगाएंगे। निदेशक अनुसंधान डा. एस.पी. दीक्षित ने कहा कि जैव विविधता के संरक्षण के लिए बहुत प्रयास किए गए हैं। राज्य में विश्व की लगभग एक प्रतिशत जैव विविधता पाई जाती है। संयोजक डा. आर.के. चहोता ने बताया कि कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय अलायंस ऑफ बायोडायवर्सिटी इंटरनैशनल और सी.आई.ए.टी. द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था, जिसमें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित प्रगतिशील किसान नेक राम शर्मा और विश्वविद्यालय कृषि दूत सहित लगभग 150 लोगों ने भाग लिया।

पालमपुर: कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित विचार-मंथन सत्र में उपस्थित आई.सी.ए.आर. के उपमहानिदेशक टी.आर. शर्मा व कुलपति प्रो. एच.के. चौधरी तथा (नीचे) वैज्ञानिक, कृषि दूत व कृषक। (भृगु)

चौलाई, बकव्हीट और चेनोपोडियम मोटे अनाज की ए.बी.सी.

कुलपति प्रोफैसर एच.के. चौधरी ने कहा कि मोटे अनाज उगाने और उपयोग करने के महत्व के बारे में किसानों में जागरूकता पैदा की गई है, परंतु किसानों के दरवाजे पर विपणन सुविधाओं को विकसित करने की आवश्यकता है। भारतीय मोटे अनाज अनुसंधान संस्थान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं और विश्वविद्यालय मोटे अनाज की पारंपरिक किस्मों की पहचान करने के लिए काम कर रहा है जो उच्च उपज देती हैं। प्रो. चौधरी ने खानपान की आदतों में बदलाव, मोटे अनाज के उत्पादन की कम लागत, स्वदेशी ज्ञान का महत्व, प्राकृतिक रूप से बायोफोर्टिफाइड फसलों व मोटे अनाज के प्रसंस्करण आदि जैसे मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने प्रतिभागियों को दैनिक आहार में मोटे अनाज का उपयोग करने के लिए कहा और चौलाई, बकव्हीट और चेनोपोडियम को मोटे अनाज की ए.बी.सी. कहा।